प्रातः सभा 17/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम् शान्ति। बाप बैठ समझाते हैं। यह दादा भी समझते हैं, क्योंकि बाप दादा द्वारा बैठ समझाते हैं। जैसे तुम समझते हो वैसे दादा भी समझते हैं। दादा को भगवान नहीं कहा जाता। यह है भगवानुवाच। बाप क्या समझाते हैं देहीअभिमानी भव। यह क्यों कहते हैं? क्योंकि अपन को आत्मा समझने से हम पतित से पावन परमपिता परमात्मा से पावन बनने वाले हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है। इस समय सभी हैं पतित और इन्हों को मनुष्य कहा जाता है, देवी देवताएं नहीं कहा जाता। यह बातें बहुत सहज समझने और समझाने की हैं। सभी को समझाना है। पुकारते भी हैं कि हम पतित हैं। नई दुनिया जरूर पावन ही होगी। नई दुनिया बनाने वाला, स्थापन करने वाला बाप है। उनको ही पतित–पावन बाबा कह बुलाते हैं। पतित–पावन के साथ बाबा भी कहते हैं। बाबा को आत्माएं बुलाती हैं, शरीर नहीं बुलावेगा। क्योंकि उनको तो पता है शरीर लौकिक बाप ने बनाया है। हमारी आत्मा का बाप पारलौकिक बाप है। एक है अलौकिक बाप, एक है लौकिक बाप, एक है पारलौकिक बाप। अभी तुम समझते हो लौकिक बाप तो पतित है, एक पारलौकिक बाप ही पावन है। यह तो अच्छी रीति याद रहना चाहिए समझाने समय। पावन दुनिया नई दुनिया और पतित है पुरानी दुनिया, यह तो अच्छी रीति बुद्धि में रहना चाहिए। यह नई दुनिया है या पुरानी दुनिया है सो समझ तो सकते हो ना। कई ऐसे भी बहुत हैं जो समझते हैं हमको सुख अपार है। हम तो जैसे कि स्वर्ग में बैठे हैं; परन्तु यह भी समझना चाहिए कलियुग को कब स्वर्ग नहीं कह सकते। नाम ही है कलियुग, पुरानी पतित दुनिया। डिफेक्ट है ना। मनुष्यों की बुद्धि में यह भी नहीं बैठता है। बिलकुल ही जड़–जड़ीभूत अवस्था है। बच्चे नहीं पढ़ते हैं तो कहते हैं ना तुम तो पत्थर बुद्धि हो। बाबा भी लिखते हैं तुम्हारे गाँव निवासी तो बिलकुल ही पत्थर बुद्धि हैं। समझते नही हैं; क्योंकि दूसरे को समझाते नहीं। खुद पारस बुद्धि बनते हैं तो दूसरों को भी बनाना चाहिए। पुरूषार्थ करना चाहिए। इसमें लज्जा आदि की तो बात ही नहीं; परन्तु मनुष्यों की बुद्धि में आधा कल्प उल्टे अक्षर पड़े हैं तो वह कोई जल्दी भूलते नहीं हैं। कैसे भुलावें, वह भुलाने की ताकत तो एक बाप के पास ही है। बाप कहते हैं इन वेदो–शास्त्रों आदि पढ़ने से तुम कुछ भी सुधरते नहीं हो और ही बिगड़े हो। सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो। यह कोई की बुद्धि में नहीं है कि हम सतोप्रधान देवी–देवता थे। 84 जन्मों के बदली 84 लाख जन्म कह दिया है तो पता कैसे पड़े? बाप बिगर तो यह ज्ञान कोई दे नहीं सकता। गोया सभी अज्ञानी ही ठहरे। उनको ज्ञान फिर कहाँ से आवे। जब तक ज्ञान सागर बाप आये सुनावे। तमोप्रधान माना ही अज्ञानी दुनिया, सतोप्रधान माना दैवी दुनिया। फर्क तो है ना। देवी–देवताएं ही फिर पुनर्जन्म लेते आये हैं। समय भी फिरता रहता है। बुद्धि भी कमजोर होती जाती है। बुद्धि का योग लगाने से जो ताकत मिली, वह फिर खलास हो जाती है। अभी तुमको बाप समझाते हैं तो तुम कितने रिफ्रेश होते हो। तुम रिफ्रेश में थे और विश्राम में थे। बाप भी लिखते हैं ना बच्चे आकर रिफ्रेश भी हो जाओ और विश्राम भी पाओ। रिफ्रेश होने के बाद तुम सतयुग विश्रामपुरी में जाते हो। वहाँ बहुत विश्राम तुमको मिलता है, वहाँ सुख–शान्ति, सम्पत्ति आदि सभी कुछ मिलता है। तो बाबा के पास आते है रिफ्रेश होने। रिफ्रेश भी शिवबाबा करते हैं। विश्राम भी शिवबाबा की गोद में लेते हैं। विश्राम माना ही शान्ति। मनुष्य थक कर विश्रामी हो जाते हैं। कोई कहाँ, कोई कहाँ जाते हैं विश्राम पाने। उसमें तो रिफ्रेशता की बात ही नहीं। यहाँ तुमको बाप रोज समझाते हैं, तो तुम यहाँ आकर रिफ्रेश होते हो। याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान बनने लिए ही तुम यहाँ आते हो। इसके लिए क्या पुरूषार्थ है? मीठे2 बच्चे बाप को याद करो। बाप ने सारी शिक्षा तो दी है यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, हमको विश्राम कैसे मिलता है और कोई भी यह बातें नही जानते, तो उन्हों को भी समझाना चाहिए ताकि वह भी इन जैसा रिफ्रेश हो जावें। अपना फर्ज ही यह है सभी को पैगाम देना। अविनाशी रिफ्रेश होना है, अविनाशी विश्राम पाना है। सभी को यह पैगाम दो। यह याद दिलाना है कि बाप को और वर्से को याद करो। यह बहुत ही सहज बात है। बेहद का बाप स्वर्ग रचते हैं, स्वर्ग का ही वर्सा देते हैं। अभी तुम हो संगमयुग पर ।

माया के श्राप और बाप के वर्से को तुम जानते हो। जब माया रावण का श्राप मिलता है तो पवित्रता भी खत्म, सुख–शान्ति धन आदि सभी खत्म हो जाता है। कैसे धीरे2 खत्म होते हैं वह भी बाप ने समझाया है, कितने जन्म लगते हैं। दुःखधाम में कोई विश्राम थोड़े ही होता है। सुखधाम में विश्राम ही विश्राम है। मनुष्यों को भक्ति कितना थकाती है। जन्म–जन्मान्तर भक्ति थका देती है, कंगाल कर देती है। यह भी अभी तुमको बाप समझाते हैं। नये2 आते हैं तो कितना समझाना पड़ता है। हरेक बात पर मनुष्य बहुत सोच करते हैं। समझते हैं कहां जादू न हो। अरे, तुम कहते हो जादूगर, तो मैं भी कहता हूँ जादूगर हूँ; परन्तु यह जादू कोई वह नही है, जो मनुष्य को रीढ़ वा घेटा आदि बना देंगे। जानवर तो नही हैं ना। यह बुद्धि से समझा जाता है। यह तो जैसे रीढ़ मिसल है। गायन भी है सुरमंडल के साज से..... इस समय सभी मनुष्य जैसे रीढ़ बकरियां हैं। यह बातें यहां के लिए ही हैं। सतयुग में नही गाते, इस समय का ही गायन है। पिछाड़ी को भी समझ नहीं सकते। आधा कल्प मेंढकों मिसल भक्ति की ट्रां2 की है। गीत आदि बहुत अच्छे गाते हैं। तब ही मनुष्यों को (कहते) हैं मेढकों की ट्रां2 छोड़ो। समझ कुछ भी है नहीं। तुम उनको मेढक समझते हो, वह तुमको मेढक समझते हैं। मेंढको की कितनी बड़ी2 सभाएं होती है। चण्डिका का कितना बड़ा मेला लगता है। अरे, वह कौन थी? कहेंगे देवी। अभी ऐसा नाम तो वहां होता ही नहीं। सतयुग में तो सदैव शुभ नाम होता है। रामचन्द्र, श्रीकृष्ण चन्द्र। श्री कहा जाता है श्रेष्ठ को। सतयुगी सम्प्रदाय को श्रेष्ठाचारी कहा जाता है। कलियुग विषियस सम्प्रदाय को श्रेष्ठ कैसे समझेंगे? आज कल के गुरु–गुसाईं जो भी हैं उन्होंने सभी को श्री–श्री का टाइटिल दे दिया है। मिस्टर–मिसेज अक्षर निकाल श्री–श्री कह देते हैं। आगे तो दामल आदि अक्षर कहते थे। सतयुग में ऐसे अक्षर होते ही नहीं। यह अशुद्ध अक्षर हैं। श्री माना श्रेष्ठ। अभी के मनुष्य तो श्रेष्ठ हैं नहीं, यह तो असुर हैं। देवताओं के सुन्दर अक्षर असुरों ने, मनुष्यों ने अपने ऊपर लगा दिया है। मनुष्य को ही असुर कहा जाता है। वह भी है मनुष्य; परन्तु उन्हों को देवता कहा जाता है। वहां मनुष्य होते ही नहीं। गायन भी है मनुष्य से देवता..... मनुष्य से देवता, देवता से मनुष्य बनते हैं; क्योंकि 5विकारों में जाते हैं। रावणराज्य में सभी मनुष्य ही हैं। वह है देवताएं। उनको डिटी वर्ल्ड, इसको ह्युमन वर्ल्ड कहा जाता है। दिन सोझरे को, रात अंधेरे को कहा जाता है। ज्ञान है सोझरा, भक्ति है अंधियारा। अज्ञान नींद कहा जाता है ना। इस फर्क को तुम ही जानते हो। तुम समझते हो हम पहले कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बातें बुद्धि में हैं। ऋषि–मुनियों से भी पूछते हैं, रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते हो? तो वह भी नेती–नेती कर के गये। हम नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो हम भी पहले नास्तिक थे। बेहद के बाप को ही नहीं जानते थे। वह है असली अविनाशी बाबा, आत्माओं का बाप। तुम बच्चे जानते हो हम उस बेहद के बाप के बने हैं, जो वह जलते नहीं हैं। यहां तो सभी जलते हैं। रावण को भी जलाते हैं। शरीर है ना फिर भी। आत्मा को तो कब कोई जला न सके। तो बच्चों को बाप गुप्त ज्ञान सुनाते हैं, जो बाप के पास ही है। यह आत्मा में गुप्त ज्ञान है। आत्मा भी गुप्त है। आत्मा इस मुख द्वारा बोलती है। इसलिए बाप कहते हैं बच्चे देहअभिमानी मत बनो, आत्मअभिमानी बनो। नहीं तो जैसे उल्टे उल्लू बन जाते हो। अपन को आत्मा भूल जाते हो। उल्लू के लिए दिन में अंधियारा होता है। रात को जागते हैं, इसलिए मनुष्य को उल्लू का पट्ठा। यह अशुद्ध अक्षर है। वहां देवताओं के युग में यह अक्षर होते ही नहीं। ड्रामा के राज को अच्छी रीति समझना है। ड्रामा को भी अच्छी रीति समझना है। ड्रामा में जो नूंध है, वह हूबहू रिपीट होता है। यह किसको भी पता नहीं है। ड्रामा अनुसार सेकण्ड व सेकण्ड चलता ही रहता है। यह भी नालेज बुद्धि में है आसमान का कोई भी पार नहीं पा सकते। धरती का पार पा सकते हैं। आकाश सूक्ष्म है, धरती तो स्थूल है। कई चीजों का पार पा सकते हैं। चक्र लगाते हैं तो देखते हैं पानी ही पानी है। आकाश और पानी उनको फिर जलमय कह देते हैं। जिसके लिए ही कोशिश करते रहते हैं। बड़े2 एरोप्लेन आदि बनाते हैं। फिर उसमें पेट्रोल भी इतना रखते हैं। जब आधा पेट्रोल खलास हो जाता है तो लौट आते है। नहीं तो रास्ते में ही डूब जायें। अभी

के ऊपर जाने की कोशिश कर रहे हैं। वहां क्या जाकर करेंगे, दुनिया तो है नहीं। जब कि कहते हैं। आकाश ही आकाश है पाताल पाताल है। शास्त्रों में सुना है ना तो ऊपर में भी जाकर देखते हैं। वहां दुनिया बसाने की कोशिश करते हैं। दुनिया बसाई तो बहुत है ना। भारत में सिर्फ एक ही देवी–देवता धर्म था और कोई खण्ड आदि न था। फिर कितना बसाया है। तुम विचार करो भारत की भी कितनी थोड़ी टुकड़ी में देवताएं होते हैं। जमुना के किनारे पर ही परिस्तान था। इसको कब्रिस्तान कहा जाता है, जहां घड़ी2 मरते रहते हैं। अमरपुरी को परिस्तान कहा जाता है। वहां सुन्दर भी बहुत होते हैं। भारत को वास्तव में परिस्तान कहते थे। यह ल0 ना0 परिस्तान के मालिक हैं। कितने शोभायमान हैं। सतोप्रधान हैं ना। नेचरल ब्यूटी थी। आत्मा में भी चमत्कार रहता है। बच्चों को दिखाया था श्रीकृष्ण का जन्म कैसे होता है। सारे कमरे में जैसे रोशनी हो जाती है। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं अभी तुम परिस्तान में जाने लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। बाकी ऐसे नहीं कि तालाब में डुबकी देने से परियां हो जावेंगी। पानी में स्नान करने से परी कैसे बन जावेंगे। यह सभी झूठे नाम रख दिये हैं। लाखों वर्ष कह देने से बिलकुल ही भूल जाते हैं। अभी तुम अभूल बन रहे हो, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। जिस अनुसार ही फिर तुम बच्चे स्वर्ग में जन्म लेते हो। नम्बरवार तो जरूर चाहिए ना। एक जैसे सभी हो न सके। विचार किया जाता है इतनी छोटी सी आत्मा कितना बड़ा पार्ट बजाती है शरीर से। फिर शरीर से आत्मा निकल जाती है तो शरीर का क्या हाल हो जाता है। आत्मा ही पार्ट बजाती है ना। कितनी बड़ी विचार की बात है। सारी दुनिया के एक्टर्स वही एक्ट बजाती है जो अनादि बना हुआ है। यह सृष्टि भी अनादि है। उनको वन्डरफुल तुम तब कहते हो जबकि जानते हो यह सृष्टि रूपी झाड़ है। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ड्रामा में फिर भी जिसके लिये जितना समय है उतना ही समझने में समय लगता है। बुद्धि का फर्क है ना। आत्मा मन बुद्धि सहित है ना। तो कितना फर्क रहता है। बच्चों को मालूम पड़ता है हमको स्कॉलरशिप लेने की है तो दिल अन्दर खुशी होती है ना। यहां भी अन्दर आने से ही एमऑबजेक्ट सामने देखते हैं तो जरूर खुशी होगी। अभी तुम जानते हो हम यह बनने लिए यहां पढ़ते हैं, नहीं तो कब कोई आ न सके। यह है एमऑबजेक्ट। ऐसा कोई स्कूल कहां भी नहीं होगा, जहां दूसरे जन्म की एमऑबजेक्ट को देख सके। तुम देख रहे हो यह स्वर्ग के मालिक हैं। हम ही यह बनने वाले हैं। अभी हम संगमयुग पर हैं। न उस राजाई के हैं, न इस राजाई के हैं। हम बीच में हैं। जा रहे हैं। खिवईया भी है निराकार, वोट भी निराकार है। वोट को खींचकर परमपिता परमात्मा ले जाते हैं। बाप सभी बच्चों को साथ में ले जावेंगे। यह चक्र पूरा होना है, फिर हूबहू रिपीट करना है। एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेंगे। छोटा बनकर फिर बड़ा बनेंगे। जैसे आम के बीज को ज़मीन में डाल देते हैं तो उनसे फिर आम निकल आते हैं। वह है हद का जड़ झाड़, यह तो मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। इनको वैराईटी झाड़ कहा जाता है। सतयुग से लेकर कलियुग तक सभी पार्ट बजाते रहते हैं। अविनाशी 84 के चक्र का पार्ट बजाती है। ल0ना0 थे जो अभी नहीं हैं। चक्र लगाकर फिर यह बनते हैं। कहेंगे पहले यह ल0ना0 थे। फिर उन्हों का यह लास्ट जन्म ब्रह्मा सरस्वती है। सभी को वापिस जरूर जाना है। स्वर्ग में तो इतने आदमी थे नहीं। न इस्लामी, न बौद्धी कोई भी धर्म के एक्टर्स नहीं थे, सिवाय देवी–देवताओं के। यह समझ भी कोई में नहीं है। समझदार को लकब मिलना चाहिए ना। जितना जो पढ़ता है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार पद पाता है। तो तुम बच्चों को यहां आने से ही यह एमऑबजेक्ट देख खुशी होनी चाहिए। खुशी का तो पारावार नहीं। स्कूल वा पाठशाला हो तो ऐसा। है कितनी गुप्त; परन्तु जबरदस्त पाठशाला है। जितनी बड़ी पढ़ाई उतनी ही बड़ी2 कॉलेजिस, फैसेलिटीज भी मिलती है। आत्मा को पढ़ना है फिर चाहे सोने की तख्त पर चाहे मिट्टी के तख्त पर चढ़े। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए; क्योंकि शिवभगवानुवाच है ना। पहले नम्बर में है यह विश्व का प्रिन्स। अभी बच्चों को पता पड़ा है कल्प2 बाप ही आकर अपना परिचय देते हैं। मैं इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को पढ़ा रहा हूँ। देवताओं में यह ज्ञान थोड़े ही होगा। मनुष्य मूँझते हैं, देवताओं में ज्ञान नहीं है। ज्ञान से तो देवता बन गये

तो फिर पढ़ाई की दरकार नहीं। बैरिस्टर बन गया फिर तो कमाई को लग जावेंगे। इसमें भी बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बुद्धि में भी कितना फर्क पड़ जाता है। शुरू से भल पढ़ रहे हैं तो भी मार्क्स दो/तीन, और पिछाड़ी में आन वाले 90/80 मार्क्स भी उठा सकते हैं। सारा बुद्धि पर मदार है ना, सो भी ड्रामा के प्लैन अनुसार। हम पुरूषार्थ कराते रहते हैं फिर जिसकी जितनी बुद्धि है। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट बुद्धि तो है ना। अभी हम जानते हैं यह पुराना शरीर छोड़ घर जाना है। सिवाय तुम्हारे और कोई ऐसे नहीं समझेंगे कि हमको अभी घर जाना है। उसको कहा जाता है मुक्तिधाम। भल वह ब्रह्म को ईश्वर समझ याद करते हैं तो भी वहां जा नहीं सकते हैं। उनकी याद में ही शरीर छोड़ते हैं, तो भी जा नहीं सकते; क्योंकि उन्हों का राइट पथ नहीं है। मूँझ गये हैं। जैसे फागी में स्टीम्बरस मूँझ पड़ते हैं ना। फिर टक्कर खा लेते हैं। मालूम ही नहीं पड़ता है। तो बाप बैठ बच्चों को सभी बातें समझाते हैं। अभी तुम नॉलेजफुल बनते हो। सारे कल्प वृक्ष और सृष्टि–चक्र कैसे फिरता है? सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त की नॉलेज बुद्धि में है। कितनी बड़ी पढ़ाई है। इतना बड़ा पढ़ाने वाला बाप है तो पद भी जरूर इतना बड़ा होगा ना। यहां अन्दर घुसते ही ल0ना0 के चित्र को देख अथवा बैज को देख खुशी होना चाहिए। तुम जानते हो हम यह प्रैक्टीकल में बनते हैं। फिर भी भूल जाते हो। तुम्हारे लिये ही गायन है अतिन्द्रीय सुख गोप–गोपियों से पूछो। तुम एवर हैप्पी हो। खुशी में डांस करते रहते हो। मिरवा..... जो फरिश्ते देवताएं बनने वाले हैं उन्हों को खुशी रहती है। वह कब घबरावेंगे नहीं। अच्छा। बाप कहते हैं गुप्त सद्गति दाता मैं ही हूँ। मैं सभी को मुक्ति–जीवनमुक्ति में ले जाता हूँ। पुरानी दुनिया का विनाश भी जरूर होना है। पुरानी दुनिया में हैं 500करोड़। नई दुनिया में कितने थोड़े होंगे। विनाश सामने खड़ा है। तो समझना चाहिए ना संगमयुग भी है। यह जब मालूम पड़े तब तो पुरूषार्थ करे ना। यह भी दिखाते हैं विनाश हुआ तो कौरव कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े थे। विनाश के समय जैसे तवाई हो जावेंगे। साधु–सन्यासियों आदि का भी कितना झगड़ा होता है। अभी गऊकोस पर कितना हंगामा हुआ। फिर जेल में भी पड़ जाते हैं। अभी कोसघर खास नया बहुत बड़ा बना रहे हैं। जूतियाँ तो ढेर चाहिए ना। नहीं तो चमड़ा कहां से लावेंगे। नहीं तो फिर बिगड़ कर आकर मनुष्यों को ही कतल करेंगे। गाजी बन जावेंगे। बुद्धि खराब होगी तो तलवार उठाकर मनुष्यों को ही मारते रहेंगे। यह सभी समझने की बातें हैं। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह मनुष्य नहीं जानते। गोया जानवर ठहरे, अनपढ़े। उसको जंगली कहा जाता है। अभी तुम जानते हो हम ऊपर से यहां सृष्टि–चक्र में पार्ट बजाने आये हैं। फिर पिछाड़ी को सभी चले जावेंगे। राम गयो रावण गयो..... तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप आकर स्वर्ग का सुख देते हैं। विश्व की बादशाही देते हैं। तुम आधा कल्प 2500वर्ष सुखधाम में थे फिर दुःखधाम में आये हो। आज है 500करोड़ कल होंगे 9लाख। कितना फर्क है। बाप सर्राफ भी है। तुम कखपन अर्पण करते हो। बाबा यह सभी कुछ आपका है। आप ने ही दिया सो आप लो। उसके बदली हमको स्वर्ग की बादशाही दो। सौदा देखो कैसे करते हो। करनीघोर को पुराना सामान दिया जाता है ना। तुम्हारे पास भी है ही क्या? जानते हो यह तो सभी विनाश हो जाने वाला है। कुछ भी न रहेगा। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और रूहानी बाप की नमस्ते।

सूचनाः– बापदादा के डायरेक्शन फरमान दिल्ली कमला नगर में फर्स्ट फरवरी से कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास खुल रहा है।